## * कबीर भजन एवं विचार मंच *

* मंच का गठन 2 जुलाई 1991 को हुआ

### 1. क्या होता है मंच में ? :-

- प्रत्येक 2 तारीख को एकलव्य देवास में रात्रि में भजन गायन एवं चर्चा. चर्चा में गाये जाने वाले भजनों की व्याख्या की जाती है. अनेक बार चर्चा में दलितों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर विश्लेषण किया जाता है. लेकिन कोई ठोस कार्य नहीं उठा पा रहे. अनेक साथियों को लगता है ; ठोस कार्यों के लिए अलग-अलग समूह बनाये जाएं. इसी बात को ध्यान में रखते हुए डॉ. सुरेश पटेल एवं कुछ अन्य साथियों ने इस पर विचार करना शुरू किया है. तभी का सुझाव है प्रत्येक 2 तारीख का कार्यक्रम इसी रूप में चलता रहे.

- देवास के अतिरिक्त अन्य 10 स्थानों पर कार्यक्रम शुरू किये गए. प्रत्येक स्थान पर 2-3 वर्ष नियमित कार्यक्रम चले. इन कार्यक्रमों का आयोजन स्थानीय साथी अपनी पहल एवं खर्चे से करते रहे.

- स्थानों के नाम -

1. पीपलरावां (सोनकच्छ) 2. आलरी (टोंकखुर्द) 3. पापड़ा (बागली) 4. बरण्डवा (तराना) 5. दोंता (टोंकखुर्द) 6. पीरपाड़ल्या (सोनकच्छ) 7. गोपालपुरा- हाटपीपल्या (बागली) 8. डोंकर- (भाजापुर) 9. मक्सी 10. खातेगाँव, बिचकुआ, भजनास, संदलपुर

उपरोक्त कार्यक्रमों के माध्यम से लगभग 250 मण्डलियों से सीधा सम्पर्क हुआ है. ये भजन मण्डलियाँ देवास, शाजापुर, उज्जैन, इंदौर एवं सीहोर जिले में फैली हुई हैं.

- प्रतिवर्ष मंच की गतिविधियों की समीक्षा होती है. मंच गठन के एक वर्ष बाद 14.2.92 की समीक्षा बैठक में लोगों की रुचि एवं चर्चा के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक मुद्दों को देखते हुए डॉ. अम्बेडकर मंच का गठन किया गया. इस मंच का उद्देश्य डॉ. अम्बेडकर के विचारों को समझना तथा दलितों की मौजूदा स्थिति के कारणों को गहराई से समझना था. इस मंच के लिए डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान संस्थान महू का पूरा सहयोग व समर्थन रहा.

कबीर भजन एवं विचार मंच के माध्यम से टोंकखुर्द विकास खण्ड की भजन मण्डलियों के भजनों का दस्तावेजीकरण किया गया. भजन मण्डलियों के प्रमुख गायकों की डायरियों को फोटोकॉपी किया. फिर टाईप करके भजनों को कबीर बीजक से तुलना की.

### * मंच का प्रकाशन :-

1. कबीरा सोई पीर है पुस्तिका का प्रकाशन किया गया. - प्रथम संस्करण = 1000/- प्रतियां
   - दूसरा संस्करण= 3000. प्रतियां
   - तीसरा संस्करण=5000 प्रतियां

जारी...

2. कबीरा सोई पीर है - कैसेट - प्रथम भाग ; दूसरा भाग एवं तीसरा भाग .

- मंच के साथियों (भजन मण्डलियों) को म.प्र. के अनेक जिलों एवं अन्य राज्यों में जाने के बहुत अवसर मिले . .

2. कबीर मंच की उपलब्धि :-

1. कबीर के तीखे भजन जाति, अंधविश्वास, धार्मिक पाखंड, को जमीनी सच्चाइयों पर चोट करने वाले गीत/भजन सीखने का अवसर मिला . इससे पहले ज़्यादातर गुरुवंदना या इसी तरह के भजन गाए जाते थे .

2. भजन सीखने व गाने में युवाओं की रूचि बढ़ी लगभग 100 नई मंडलियां बनी .

3. अपने गाँव से बाहर भजन गाने का अवतर मिला इससे खुलकर चर्चा भी होने लगी , सुनने वाले भी ज़्यादा जुड़ने लगे .

4. कबीर भजनों का प्रचार-प्रसार किताबों एवं कैसेट के माध्यम से होने लगा .

इस क्षेत्र में कबीर भजनों की पहली कैसेट मंच के माध्यम से ही निकली है . अब तो कई मंडलियों ने (श्री टिपान्याजी, एवं श्री सुभाष - झोंकर वाले , श्री अरुण गोयल - हाटपीपल्या वाले, इत्यादि अनेक साथियों की कैसेट बाजार में आ गई है .

5. भजन मण्डलियों की नई पहचान स्थापित हुई . [redacted] से अनेक मंडलियां जुड़ी . दूरदर्शन पर कार्यक्रम आने लगे . बड़े सांस्कृतिक कार्यक्रमों , मेलों में मंडलियों को बुलाया जाने लगा .

6. भजन मण्डलियों में ज़्यादातर ग़रीब व दलित लोग जुड़े हैं, ये साथी (विशेषकर टोंकखुर्द ब्लाक में) साक्षरता अभियान में भी रूचि से जुड़े .

7. भजनों के साथ चर्चा का वातावरण बनने लगा है इससे खुलापन बंट रहा है . स्थानीय स्तर के कार्यक्रमों में गहरी चर्चाएं होने लगीं हैं .

8. मंच से जुड़ी मण्डलियों की डायरेक्टरी (साईक्लोस्टाईल) निकाली इससे दूर-दूर की विभिन्न मंडलियों में सीधा संवाद स्थापित होने लगा .

3. मंच की दिक्कतें :-

1. मंच की शुरूआत एकलव्य ने की थी शुरू में मण्डलियों को देवास बुलाने के किराया देते थे . चूंकि दूर गाँव से गरीब व्यक्ति अपना किराया खर्च करके नहीं आ सकता था इससे मंडलियां तो जुड़ीं लेकिन 2 तारीख वाला कार्यक्रम एकलव्य केन्द्रित हो गया .

2. भजन मण्डलियों में अनेक (शिक्षा व आर्थिक) स्तर के व्यक्ति आते हैं . शिक्षक, कारखाने में काम करने वाले, कृषक, मजदूर इत्यादि . कई व्यक्ति कबीर को केवल धार्मिक , साहित्यिक रूप से

जारी...

ही देखते हैं . कई क्रांतिकारी (रूढ़ियों व जाति पर चोट करने वाला) के रूप में लोगों के स्तर व विचारों में विविधता के कारण चर्चा में बहुत फैलाव हो जाता है . कुछ व्यक्ति केवल भजन का आनंद लेना चाहते हैं . कुछ चर्चा गंभीरतापूर्वक करना चाहते हैं . इस तरह के विविधता वाले समूह का संतुलित संचालन करना काफी मुश्किल कार्य रहा है .

3. कई मंडलियों का इस बात पर ज्यादा ध्यान है कि उनका कैसेट बने, आकाशवाणी में भजन गाएँ, एकलव्य के माध्यम से अन्य स्थानों पर जाने का अवसर मिले .

4. आगे की कार्य योजना :-

1. देवास में 2 तारीख का कार्यक्रम चलते रहना चाहिए .. लेकिन इसमें ज़्यादा इनपुट नहीं डाले जा सकते . अतः कार्यक्रम के स्तर में गिरावट तो आयेगी ही . हो सकता है धीरे-धीरे अपने-आप बंद हो जाये .

2. खातेगाँव ब्लाक का कार्यक्रम :-

खातेगाँव ब्लाक का कार्यक्रम एकलव्य केन्द्रित [illegible] र, भजन मंडली आधारित होना चाहि[illegible]

- कैसे करेंगे -

1. विभिन्न भजन मण्डलियों व [illegible]तिक समूहों से स[illegible] पहचान बनाना .
2. रूचि रखने वाले साथियों की पहचान कर संवाद [illegible]पित कर[illegible]
3. क्लस्टर स्तर पर या इससे भी छोटे स्तर पर स्थानीय [illegible] भजन व [illegible] आयोजित करना .
4. भजनों के साथ-साथ सामाजिक कार्य, शिक्षा, बचत समूह व पंचायत इत्यादि कार्य की जानकारी देना . यह जानकारी एकलव्य से संबंधित व्यक्ति द्वारा दी जा सकती है .

इसका मुख्य उद्देश्य विकास कार्यों हेतु वातावरण बनाना है . सम्पर्क कार्य नारायणजी अपनी पहल पर करेंगे . कहीं-कहीं पर एकलव्य के अन्य साथियों के सहयोग की जरूरत रहेगी . नारायणजी प्रत्येक माह 15 दिन खातेगाँव ब्लाक में यह कार्य करेंगे .

सम्पर्क, संवाद, भजन व चर्चा कार्यक्रम सामान्यतः 6 महीने ही कर पायेंगे . नवम्बर - फरवरी (4 महीने) अप्रैल-मई (2 महीने) बाकी महीनों में बरसात व खेती के कार्य के कारण सम्पर्क नहीं हो सकेगा . इन महिनों में नारायणजी क्या करेंगे यह सोचकर तय करना है .

नारायणजी एवं आर. एन. स्याग
की 6. 10. 98 की चर्चा का सार .